



ओ३म  
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

गां मा हिंसी:। यजुर्वेद-13/43

हे मनुष्यों गाय को मत मारो।

O ye human ! Do not hurt the cow.

वर्ष 39, अंक 4

एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 30 नवम्बर, 2015 से रविवार 6 दिसम्बर, 2015

विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116

दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

## कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे का बयान निंदनीय

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं शिक्षा मंत्री को आर्य समाज का खुला पत्र

### इतिहास की पाठ्य पुस्तकों से समाप्त करनी ही होगी 'आर्य बाहर से आए थे की अवधारणा'

गत दिनों संसद के शीतकालीन सत्र में कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा दिये गए भारत के मूल निवासियों के संबंध में बयान की सम्पूर्ण हिन्दू जगत में घोर निंदा की जा रही है। ज्ञातव्य है कि जैसा हमें पढ़ाया जाता है हमें वैसा ही ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें मल्लिकार्जुन को दोष देना उचित प्रतीत नहीं होता। किन्तु एक नेता की राष्ट्रीय भावना को देखते हुए कोई भी बयान देना चाहिए।

इस बयान से कुछ दिन ही पूर्व महर्षि दयानन्द निर्माणोत्सव समारोह में इस विषय पर वृहद् वक्तव्य दिया गया और सिद्ध किया गया कि आर्य ही भारत के मूल निवासी हैं। हम ही शिव से लेकर कि राम, कृष्ण एवं आर्य ऋषि-मुनियों के वंशज हैं। ऐसा नहीं है कि दिल्ली में घटित होने वाली किसी भी घटना/समारोह की सूचना इन राजनेताओं तक ना पहुंचती हो। फिर भी इनका ऐसा वक्तव्य इनकी और इन जैसे अवसरवादियों की मानसिकता को दर्शाता है।

आस्ट्रेलिया में चल रहे अन्तर्राष्ट्रीय

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जब इसकी सूचना प्राप्त हुई तो अन्तर्राष्ट्रीय मंच से इसके विरोध में निंदा प्रस्ताव पारित किया गया और समस्त विश्व की आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों आदि का आह्वान किया गया कि भारत के तथाकथित इतिहास से 'आर्य

शिक्षा राज्य सरकार का विषय है। इसलिए राज्यों के मुख्यमंत्री, गृह मंत्री, शिक्षा मंत्री एवं राज्यपाल को इतिहास विषयक त्रुटि को निर्मूल करने के लिए पत्र लिखें।

उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं शिक्षा मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी को

उन्होंने केन्द्र सरकार से तत्काल रूप से एनसीईआरटी एवं एससीईआरटी से ऐसे बिन्दुओं को हटवाने के लिए उन्हें सारे देश से अधिकाधिक ज्ञापन पत्र भेजने का अनुरोध किया।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने खड़गे के बयान पर आपत्ति करते हुए इसे सदन की कार्यवाही से हटाने का निवेदन करने एवं सभापति श्रीमती सुमित्रा महाजन द्वारा हटाने की स्वीकृति देने के लिए सार्वदेशिक सभा उनका हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने इस विषय में एक समिति का गठन करते हुए कहा कि जब तक इतिहास की पुस्तकों से इस प्रकार की बातें हटाई नहीं जाती तब तक ऐसे दोषपूर्ण वक्तव्यों पर रोक लगाना असंभव सा होगा। उन्होंने कहा इतिहास की पुस्तकों से ऐसे मिथ्या वाक्यों को हटाने के लिए न्यायिक उपाय किए जाएंगे और यदि आवश्यकता पड़ी तो देश व्यापी हस्ताक्षर अभियान भी चलाया जाएगा।

### कब तक दूषित इतिहास पढ़ाया जाता रहेगा?

संसद के शीतकालीन सत्र में कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने जिस तरह आर्यों को बाहरी और खुद को भारतीय बताया ये बात समझ से परे है आखिर किस आधार पर आर्यों को बाहरी कहा! करोड़ों सालों से भारतीय सभ्यता, संस्कृति भारत के नैतिक मूल्यों और परम्पराओं की रक्षा करते हुए अपनी जान की परवाह न कर इस मिट्टी की रक्षा के लिए अपने प्राण मात्रभूमि के चरणों में अर्पित करने वाले लोग यदि मल्लिकार्जुन खड़गे की नजरों में बाहरी हैं तो सौभाग्यशाली है ये पावन भूमि कि आर्य इसकी रक्षा के लिए लड़े वरना

...शेष पेज 5 पर

बाहर से आए थे' को हटाने के लिए भारत सरकार को ज्ञापन पत्र भेजे जाएं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य ने समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत में

लिखे पत्र में निवेदन किया है कि भारत सरकार समस्त राज्यों को दिशा-निर्देश जारी करे कि भारतीय इतिहास को बिगाड़ने वाले ऐसे मिथ्या वाक्य बिन्दुओं को पाठ्य पुस्तकों से तत्काल हटाने के लिए आदेश जारी करे।

सरकार के कार्य, विपक्ष की आलोचना, मीडिया की खबर और जनता जनार्दन की गर्दन चारों ओर घूम रही है और इन चारों में एक समानता ये है कि कोई भी सही और गलत नहीं समझ और समझा पा रहा है। लेकिन एक बात सत्य है आज हिन्दू मुस्लिम के बीच एक खाई

### सत्ता का नहीं, जनाजे का चौथा कंधा है मीडिया

.....अपराधी अपराधी है। चाहे वो किसी भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय या दुर्लभ, विलुप्त प्रजाति का ही क्यों न हो उसके लिए देश में लोकतंत्र है, कानून है, सरकार है, अदालत है, लेकिन हर अपराध के बाद न्यूज स्टूडियो में जिस तरह धार्मिक अदालतें लगती हैं, एक मौलाना, एक आरएसएस से, एक बीजेपी से, एक वामपंथी, कांग्रेसी बैठाकर दलीले ली-दी जाती हैं वो जरूर समाज के आपसी सौहार्द को कमजोर करती है। .....

जरूर पड़ गयी है और इस खाई के निर्माण का सारा श्रेय में मीडिया और सेकुलर दलों को दूंगा क्योंकि ये लोग जिन-जिन बातों को आज वोटो व नोटो के लालच में दबा रहे हैं वो खबर कल देश के अन्दर विस्फोट का कारण बनेगी हर एक

...शेष पेज 7 पर

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 13 दिसम्बर 2015 दोपहर 2.00 बजे : आर्य समाज हनुमान रोड

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों से निवेदन है कि सभा की बैठक में अवश्य ही समय पर पहुंच कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

**नोट:** बैठक से पूर्व दोपहर 1.00 बजे समस्त माननीय सदस्यों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई है। कृपया समय पर अवश्य पधारें।

निवेदक :- धर्मपाल आर्य (प्रधान)

विनय आर्य (महामंत्री)

### सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 20 दिसम्बर 2015 प्रातः 11.00 बजे : आर्य समाज हनुमान रोड

सार्वदेशिक सभा के समस्त अधिकारियों अंतरंग सदस्यों, विशेष आमंत्रित एवं समस्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मंत्री महोदयों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही समय पर पधार कर सभा संचालन में अपना सहयोग प्रदान करें। सभी सदस्यों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था आर्य समाज हनुमान रोड में की गई है।

निवेदक :- आचार्य बलदेव (प्रधान)

प्रकाश आर्य (मंत्री)



**"अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन" 2015 सिडनी (आस्ट्रेलिया) सम्पन्न**

(विस्तृत रिपोर्ट व चित्रमय झांकी अगले अंकों में)

**विनय-** हे परमेश्वर! मुझे यह वाणी तेरे नामोच्चारण के लिए ही मिली है। मैं निरंतर तेरे पवित्र नामों का उच्चारण करता रहता हूँ। तेरी दी हुई इस वाणी से मैं अन्य कुछ कर ही नहीं सकता, कोई भी निरर्थक बात, कोई भी अनीश्वरीय बात, मेरी वाणी से नहीं निकल सकती। मेरे एक-एक कथन में तेरी ही धुन होती है, तेरा ही निवास होता है। हे इन्द्र! मैं इस प्रकार अपनी सब वाणियों से नानारूप में तेरे ही नामों का कीर्तन करता रहता हूँ। यदि मैं ऐसा न करूँ तो मैं अपने शत्रुओं को कैसे पराजित कर सकूँ? उनसे कैसे रक्षित रहूँ? तेरा पवित्र नामोच्चारण करता हुआ ही मैं निरंतर सब शत्रुओं पर विजयी हुआ हूँ और हो रहा हूँ। मेरा सबसे बड़ा शत्रु "अभिमाति" है, अभिमान है। आजकल इस महाशत्रु को मार डालने के लिए विशेषतया तेरा नाम मेरा महा-अस्त्र हो रहा है। जब मनुष्य के

स्वाध्याय

## जिह्वा से प्रभु- नामोच्चारण

नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भरीमहे। इन्द्राभिमातिषाह्ये।।

-ऋ. 3/37/3 अथर्व. 20/19/3

ऋषिः- गाथिनो विश्वामित्रः।। देवता- इन्द्रः।। छन्दः- गायत्री।।

काम, क्रोध आदि अन्य शत्रु जीते जा चुके होते हैं, मनुष्य आत्मिक उन्नति की ऊंची अवस्था को पहुंचा होता है, तब भी यह अभिमान, अस्मिता, अहंकार, मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता। यही है जो अविद्या का कुछ अंश शेष रहने तक भी आत्मा का मुकाबला करता रहता है। हे मेरे परमेश्वर! यही है जो मुझे अन्त तक तुमसे जुदा किये रहता है। जब मनुष्य खूब उन्नत हो जाता है, तब उसे और कुछ नहीं तो अपनी उन्नतावस्था का, अपने पुण्यात्मा होने का अभिमान हो जाया करता है। यह अभिमान ही मनुष्य को बिल्कुल पतित

कर देने के लिए पर्याप्त होता है। हे शतक्रतो! हे अनन्तवीर्य! हे अनन्तप्रज्ञ! इसीलिए मैं निरंतर तेरे नाम को जपता रहता हूँ, जीभ पर तेरा परमपवित्र नाम रक्खे फिरता हूँ। जब तनिक भी अभिमान मन में आता है "यह बड़ा भारी काम मैं कर रहा हूँ", "यह मैंने किया" तो तुरंत मेरे हाथ जुड़ जाते हैं और मुख से तेरा नाम निकल पड़ता है। इस प्रकार इस महाशत्रु से मेरी रक्षा हो जाती है। तेरा नाम मुझे तुरंत नमा देता है, तेरा स्मरण आते ही मैं अवनत-शिर होकर भूमि पर मस्तक टेक देता हूँ। तब उस महाबली अभिमान को क्षण भर में विलीन हो चुका पाता हूँ, चारों ओर

कोसों दूर तक उसका पता नहीं होता, सब पृथिवी पर तुम-ही-तुम होते हो और मैं तुम्हारे चरणों में। मैं उस समय तेरे पृथिवीरूप विस्तृत चरणों में लगी हुई धूल का एक परम तुच्छ कण बनकर निरभिमानता के परम सात्विक सुख का उपभोग पाता हूँ। हे नाथ! तेरे नाम की अपार महिमा का मैं क्या वर्ण करूँ।

**शब्दार्थ-** शतक्रतो-हे अनन्तकर्म। हे अनन्तप्रज्ञ। विश्वाभि। गीर्भिः- मैं अपनी सब वाणियों से ते नामानि-तेरे नामों को ईमहे-लेता रहता हूँ, इन्द्र-हे परमेश्वर। अभिमातिषाह्ये-शत्रु का-अभिमान-शत्रु का पराभव करने के लिए तेरा नाम लेता हूँ।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

## वो बाटला हाउस नहीं पेरिस है?

**बा**टला हाउस एन्काउंटर जिसे आधिकारिक तौर पर आपरेशन बाटला हाउस के रूप में जाना जाता है, 19 सितंबर 2008 को दिल्ली के जामिया नगर इलाके में इंडियन मुजाहिद्दीन के संदिग्ध आतंकवादियों के खिलाफ की गयी मुठभेड़ थी, जिसमें दो संदिग्ध आतंकवादी आतिफ अमीन और मोहम्मद साजिद मारे गए थे, दो अन्य संदिग्ध सैफ मोहम्मद और आरिज खान भागने में कामयाब हो गए थे, जबकि एक और आरोपी जीशान को गिरफ्तार कर लिया गया था। इस मुठभेड़ का नेतृत्व कर रहे एन्काउंटर विशेषज्ञ और दिल्ली पुलिस निरीक्षक मोहन चंद शर्मा इस घटना में मारे गए। मुठभेड़ के दौरान स्थानीय लोगों की गिरफ्तारी हुई, जिसके खिलाफ अनेक तथाकथित धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों, कार्यकर्ताओं, और विशेष रूप से जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के शिक्षकों और छात्रों ने व्यापक रूप से विरोध प्रदर्शन किया था। समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जैसे कई राजनीतिक संगठनों ने संसद में मुठभेड़ की न्यायिक जांच करने की मांग उठाई, जिस पर काँग्रेस नेता सलमान खुर्शीद ने दुःख जताया और जिसे सुनकर कहा जाता है कि सोनिया गाँधी जी की आंखें भी डबडबा गयी थीं।

अब ये आंसू आतंकवाद के प्रति हमदर्दी के थे या वोटों के लिए यह तो उनकी पार्टी जाने या वो खुद लेकिन इतना जरूर है कि इन राजनैतिक दलों के आतंकवाद के प्रति उदार रवैये से भारत का हिन्दू और मुस्लिम अपने-अपने धर्म के प्रति हद से ज्यादा उदारता दिखाने को मजबूर हुआ जिसे कुछ लोग असहिष्णुता का नाम भी दे रहे हैं।

अन्याय, विद्रोह का जन्मदाता है, उपेक्षा, क्रोध और कोप से बदले की भावना उत्पन्न होती है उचित समय पर न्याय ही राष्ट्र की समस्याओं के समाधान का कारक होता है। लेकिन एक विशेष वर्ग समुदाय का वोट पाने का जो हथकंडा इन धर्मनिरपेक्ष दलों ने अपनाया है वह आगे चलकर देश के लिए खतरनाक साबित होने की सम्भावना दर्शाता है, जिसका उदाहरण याकूब मेमन के जनाजे के पीछे चलने वाली भीड़ से अंदाजा लगाया जा सकता है दरअसल इन धर्मनिरपेक्ष दलों की सहानुभूति तो वोट पाने तक सीमित थी लेकिन कुछ विशेष समुदाय के लोग इसे आतंक के प्रति लगाव समझ बैठे और बढ-चढ़ कर आतंकियों के जनाजे में शामिल होने लगे अब इसके लिए न हिन्दू दोषी हैं न मुस्लिम। यदि दोषी हैं तो कहीं न कहीं वो लोग जो खुले मंच से राष्ट्रद्रोह के बयान दे रहे हैं और वे लोग जो इन बयानों को वैध ठहरा रहे हैं। कुछ नेता पाकिस्तान जाकर देश विरोधी बयान दे रहे हैं, हो सकता है उनके लिए यह राजनैतिक एजेंडा हो क्या यह संविधान की नजर में राष्ट्रद्रोह नहीं है। जबकि अन्य देशों में ऐसा नहीं है।

साप्ताहिक पत्रिका शाली हेबदो के कार्यालय पर घातक हमला कर 12 लोगों की हत्या के कुछ महीनों बाद 13 नवंबर को पेरिस में आतंकवादी हमला कर करीब 130 लोगों की हत्या कर दी गयी जिससे फ्रांस समेत मानवीय मूल्यों की रक्षा करने वाले सभी देश सकते में आ गये और आतंक के समूल नाश करने के लिए एकजुट होने लगे लेकिन फिर भी अपने देश के मणिशंकर अय्यर और आजम खान जैसे नेता इस हमले को भी जायज ठहराने में लगे रहे, जबकि भारत के बाद किसी धर्मनिरपेक्ष देश में मुसलमानों की सर्वाधिक आबादी फ्रांस में है लेकिन वहां के किसी राजनैतिक दल ने इसे फर्जी मुठभेड़ नहीं कहा और हमले के बाद आजतक कार्यवाही चालू है सभी जानते हैं कि स्थानीय लोगों की मदद के बिना कभी किसी देश में हमला नहीं होता अतः सभी राजनैतिक दलों को इस बात को समझना होगा कि अपने आस-पास भी यह आतंक की प्रयोगशाला न बन पाए क्योंकि आज जो लोग आपको मतदाता के रूप में दिखाई दे रहे हैं हो सकता है कल आतंक की जेहादी बहाबी मानसिकता यहां भी पैर पसार ले और ये लोग ही आतंकी का रूप धारण कर लें और आतंक का केंसर सबसे पहले मानवता का दोहन करता है जैसे भी भारत आतंकवाद का शिकार देश है अंतर्राष्ट्रीय आंकड़ों में शिकार 162 देशों में भारत छठे नंबर पर आता है फिर भी हमारा देश आतंक को लेकर गंभीर नहीं है। -सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

## भ्रान्ति निवारण

**प्रश्न 1:** ग्रन्थों के नामों के आधार पर 'भ्रान्ति-निवारण' और 'भ्रमोच्छेदन' दोनों एक से ही ग्रन्थ प्रतीत होते हैं। एक ही ग्रन्थ में सब भ्रान्तियों का उत्तर नहीं दे देना चाहिए था?

**उत्तर:** ये दोनों ग्रन्थ एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। 'भ्रमोच्छेदन' में पंडित विशुद्धानन्द जी और राजा शिवप्रसाद जी की नासमझी से अधिकांशतः 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' से सम्बन्धित कुछ प्रसंगों को स्पष्ट किया गया था। जबकि इस 'भ्रान्ति-निवारण' में वेदभाष्य सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

**प्रश्न 2:** ये प्रश्न क्यों उठाये गये थे? **उत्तर:** महर्षि दयानन्द ने संसार के उपकार के लिए सभी विद्याओं के मूलभूत वेदों के अर्थ प्राचीन ऋषियों की व्याख्या, निरुक्त तथा अन्य सत्य ग्रन्थों के प्रमाणों के आधार पर करना प्रारम्भ किया। ये अर्थ उस समय प्रचलित सायण आदि विदेशियों के द्वारा किये गये अर्थों से विरुद्ध थे तथा पौराणिकों के मतों का खण्डन इनसे स्वतः होता था। अतः लोगों को वेदों के ये गौरवशाली अर्थ रास नहीं आ रहे थे।

**प्रश्न 3:** इस पुस्तक में जिन शंकाओं अथवा भ्रान्तियों का निवारण किया गया है, वे किसने उठाई थी?

**उत्तर:** इस पुस्तक में प्रस्तुत उत्तर कलकत्ता के संस्कृत कालेज के ऑफिशियेटिंग प्रिन्सिपल पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न द्वारा उठाई गई भ्रान्तियों के हैं।

**प्रश्न 4:** क्या उस समय केवल एक ही विद्वान् था जिसने एतत्सम्बन्धी प्रश्न किये थे, अन्य किसी ने नहीं? **उत्तर:** ऐसा नहीं है। स्वामी जी इस पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं, "इस वेदभाष्य के विषय में पहले आर. ग्रिफिथ साहब, सी.एच. टानी

और पण्डित गुरुप्रसाद आदि पुरुषों ने कहीं-कहीं अपनी सामर्थ्य के अनुसार पकड़ की थी सो उनका उत्तर अच्छे प्रकार दे दिया गया था।" वैसे महर्षि उस समय अपने बनाये मासिक अंकों में भी विद्वानों के समझने के लिए संकेत दे देते थे, जिससे उनको समझने में सुविधा हो और व्यक्तिगत रूप से बार-बार पूछने में महर्षि का अमूल्य समय बरबाद न हो।

**प्रश्न 6:** जब महर्षि ने पहले शंकाओं का समाधान कर ही दिया था, तो फिर पुनः समाधान की क्या आवश्यकता थी?

**उत्तर:** महर्षि भी बार-बार इन कामों में अपना बहुमूल्य समय खर्च नहीं करना चाहते थे, परंतु दो बातों को लक्ष्य में रखकर उन्होंने पुनः लिखना आवश्यक समझा। महर्षि के शब्दों में, 1. "एक तो यह कि ईश्वरकृत सत्य विद्या पुस्तक वेदों पर दोष न आवे कि उनमें अनेक परमेश्वर की पूजा पाई जाती है, और 2. दूसरे, यह कि आगे को मनुष्यों को प्रकट हो जाये कि ऐसी-ऐसी व्यर्थ कुतर्क फिर खड़ी करके मेरा काल न खोवें।"

**प्रश्न 6 :** इस पुस्तक में किस भाषा में शंकाओं का उत्तर दिया गया है? **उत्तर:** हिन्दी भाषा में ही सब शंकाओं का उत्तर है।

**प्रश्न 7.** यह किस समय लिखी गई?

**उत्तर:** इसका समय संवत् 1934, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि है।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी) वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

आज समाज में सर्वत्र नये-नये विवादों को जन्म मिलता जा रहा है। देखा जाये तो जो-जो वाद आज प्रचारित व प्रसारित हो रहे हैं, वह सत्यता में वाद नहीं है, वह तो सामान्य ही रूप हैं किन्तु कुछ तथाकथित राजनीतिज्ञों ने अपने स्वार्थी भावों को जागृत कर समस्त भारतवर्ष को धिनौनी चादर से व्याप्त करने का अकरणीय कदम आगे बढ़ाया है। संसार में प्रायः हम सत्यता को देख नहीं पाते जिसको हम सत्य स्वीकार करते हैं, उसके पीछे का दृश्य कुछ भिन्न ही होता है। हमारे नेत्रों पर अज्ञानता का ऐसा उपनेत्र लगा हुआ होता है कि हम जिस भी सत्य वस्तु को देखना चाहे वह असत्यमय ही दिखायी देती है। अभी हाल में ही असहिष्णुता नये अवतार में अवतरित हो रही है। इसके सम्पूर्ण परिदृश्य को देखने से पहले जान लें कि असहिष्णुता क्या है? उसको सही स्वीकार करें अथवा गलत? क्या एक देश को अपने देश की सीमाओं को सुरक्षित रखना चाहिए अथवा नहीं? क्या एक देश को अपने देश की सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए सहिष्णु नहीं होना चाहिए? यदि हम सहिष्णु हो सकते हैं तो देश के सीमाबल की क्या आवश्यकता है? सब कुछ समाप्त कर देना चाहिए, सभी सैनिकों को आदेश दे देना चाहिए कि वे अपने-अपने घरों में जाकर आराम करें, क्योंकि हम सहिष्णु हैं। सहिष्णुता का सीधा-सा अर्थ है कि 'सहनं शीलं यस्य सः सहिष्णुः, तस्य भावः सहिष्णुता' अर्थात् सहन करने का शील जिसका हो उसे सहिष्णुता कहते हैं। आज जो हम लोगों को असहिष्णु होने का पाठ पढ़ाया जा रहा है वह कुछ यूँ है कि जब से मोदी सरकार देश को उन्नति की राह पर ले जा रही है, वहाँ विपक्षीदलों के पास विरोध करने का अथवा गलतियाँ निकालने का कोई और रास्ता ही नहीं है। जब रास्ता न दिखा तब यूँ कहना उचित समझा - वर्तमान सरकार हिन्दू समाज की पक्षधर है, और हिन्दूओं के कारण मुस्लिम व अल्पसंख्यकों का देश में रहना मुश्किल हो रहा है। इस मुश्किल को असहिष्णुता का नाम दे रहे हैं। वर्तमान सरकार का प्रत्येक कदम प्रत्येक भारतवासी के लिए समर्पित है न कि किसी हिन्दू-मुस्लिम के लिए। बस इसको राजनीतिक मुद्दा बनाया जा रहा है। इसके सिवाय और कुछ नहीं है। इसमें दोष मीडिया का भी है कि वह इस दृश्य को बार-बार दिखा कर जनता को भ्रमित कर रही है। भारतवर्ष की आर्य संस्कृति विशाल उदार हृदयता वाली है, जिसने सभी धर्मों-वर्णों-सम्प्रदायों अथवा समुदायों

## देश को गुमराह करने की कोशिश न करें!

...आमिर ने 'सत्यमेव जयते' में कहा था कि 'ये बदमाश लोग देश को अपमानित कर रहे हैं। देश बड़ी-बड़ी इमारतों से नहीं बनता बल्कि इसमें रहने वाले सभ्य नागरिकों से बनता है' पर आज देश उसी आवाज को अपनी आवाज बनाकर पूछना चाहता हूँ कि-क्या यही सब कहकर देश का नाम रोशन करना चाहते हो? क्या स्वयं देश के जिम्मेदार नागरिक नहीं बनना चाहते? देश का अन्न खाकर देश को गलत बताते हुए शर्म नहीं आती?...

के साथ ही विभिन्न मतों के लोगों को स्वयं में समाहित किया। किन्तु बहुत आश्चर्य की बात है इस महान् संस्कृति को समस्त देशवासियों के प्रति सहिष्णु होने का पाठ पढ़ाया जा रहा है। यह कैसा विरोधाभास है कि पिछले कुछ काल से यहाँ के युवाओं की पहली पसन्द ऐसे तीनों फिल्मीकलाकार हैं, जो अल्पसंख्यक हैं और अल्पसंख्यक होने के साथ-साथ मुसलमान भी हैं। सलमान खान, आमिर खान और शाहरुख खान ये तीनों ऐसे अभिनेता हैं, जिन्होंने अपने अभिनय से सम्पूर्ण भारतवर्ष के युवाओं को आकर्षित किया है। १२५ करोड़ की आबादी से व्याप्त देश के लोगों ने देवानन्द, राजकपूर, राजकुमार आदि अभिनेताओं के स्थान पर इन त्रिखानों को सहृदयता पूर्वक स्वीकार किया। यह ध्यातव्य है कि १२५ करोड़ की आबादी में हिन्दू बहुसंख्यक हैं। हम केवल मात्र वाचिकरूपेण समानता को स्वीकार नहीं करते अपितु मनसा-वाचा-कर्मणा होकर व्यवहार में व्यवहृत होते हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो क्या आज की ये त्रिमूर्तियाँ विश्वपटल पर अपने आप को स्थापित कर पातीं? क्या आमिर खान ये बता सकते हैं कि उनके चाहने वाले कितने हिन्दू तथा कितने मुसलमान हैं? किन्तु बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज कुछ अभिनेताओं, लेखकों, साहित्यकारों आदि को पिछले कुछ महीनों से देश में असहिष्णुता नजर आ रही है। दुःखों की अपार सीमा तो तब जा कर और बढ़ गयी जब 'सत्यमेव जयते' जैसे कार्यक्रम को चलाने वाले अभिनेता ने देश में असहिष्णुता का दृश्य है, ऐसा कहा। भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता की परिचायिका है। आज आमिर खान ने जो ख्याति पायी है उसमें भारतवर्ष की सहिष्णुता का ही योगदान है। भारत की जनसंख्या में ७९.८ प्रतिशत (१०१ करोड़) हिन्दू निवास करते हैं, शायद आमिर को ज्ञात होना चाहिए कि इतना बड़ा अभिनेता बनाने में इनका भी कोई न कोई हाथ रहा होगा और आज वही अभिनेता देश के खुले मंच से देश की निन्दा कर रहा है। आमिर ने दो शादियाँ की, वो भी दोनों हिन्दू स्त्रियों से पर फिर

भी किसी ने कुछ नहीं कहा किन्तु आज उन्हें डर लग रहा है। मुझे वो शब्द याद आ रहे हैं जब आमिर ने 'सत्यमेव जयते' में कहा था कि 'ये बदमाश लोग देश को अपमानित कर रहे हैं। देश बड़ी-बड़ी इमारतों से नहीं बनता बल्कि इसमें रहने वाले सभ्य नागरिकों से बनता है' पर आज देश उसी आवाज को अपनी आवाज बनाकर पूछना चाहता हूँ कि-क्या यही सब कहकर देश का नाम रोशन करना चाहते हो? क्या स्वयं देश के जिम्मेदार नागरिक नहीं बनना चाहते? देश का अन्न खाकर देश को गलत बताते हुए शर्म नहीं आती? कल तक जो देश आमिर खान के लिए अतुल्य भारत हुआ करता था वह आज असहनशील कैसे लग रहा है? शायद मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अभिनय में कुछ कलाकार अपना सब कुछ भूलकर कलाकृति में ही डूब जाते हैं, जो वर्तमान दशा के स्वर्णिम कदमों को देखना ही भूल जाते हैं। उन्हें वर्तमान तथा बीते हुये पलों में कोई अन्तर नहीं दिखायी देता। भारतवर्ष की सैकड़ों साल पुरानी सहिष्णुता की परम्परा को निशाना बनाया जा रहा है। असहिष्णुतावादियों ने ध्यान दिया होगा कि हमारे बुद्धिजीवियों का एक समूह दादरी हिंसा पर तो घड़ियाली आंसू बहाता है, लेकिन देश के अन्य राज्यों में हो रही साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाओं पर वे चुप्पी साध लेते हैं। पश्चिम बंगाल, केरल और असम जैसे राज्यों में नित्य हिन्दुओं पर अत्याचार किए जाते हैं लेकिन इन पर समाज के तथाकथित बुद्धिजीवी कुछ भी बोलना पसन्द नहीं करते। क्या असहिष्णुतावादियों को कश्मीर घाटी से विस्थापित हो गए पण्डितों के दर्द की चीख नहीं सुनायी देती? क्या कभी उनके दर्द को जानने की कोशिश की? लगभग साढ़े तीन लाख कश्मीरी पण्डितों को अपने अस्तित्व को बचाने के लिए कश्मीर को छोड़ना पड़ा। वहाँ पर इस्लामिक चरमपंथी कत्लेआम कर रहे हैं, पर तब भी असहिष्णुतावादी अभिनेताओं, साहित्यकारों ने कुछ भी नहीं बोला? जब १९८४ में सिक्ख दंगे हुए तब किसी ने क्यों पुरस्कार नहीं

लौटाये? जब 2013 में कश्मीर के नादीमार्ग जिले के पुलवामा गाँव में ११ पुरुषों, ११ स्त्रियों तथा २ बच्चों को सामने खड़ाकरके गोली से उड़ा दिया गया, तब किसी को क्यों असहिष्णुता नजर नहीं आयी? देश का आवाम जानना चाहता है जब 2008 में 26/11 का दर्दनाक शय सबके सामने नजर आया तब क्यों किसी ने सरकार पर अंगुली नहीं उठायी? कहाँ सो रहे थे? तब क्यों अपने पुरस्कार नहीं लौटाये? आज जब भारत को दिशा देने वाला सही शासक मिला है, जो देश को प्रत्येक क्षेत्र में आगे ले जाना चाहता है तब ये लेखक, साहित्यकार, अभिनेता आदि असहिष्णुतावादी सरकारी सम्मान वापस करने का नाटक कर रहे हैं। ये लोग सम्मान को वापस करने और देश को छोड़ने की बातें करते हैं वे सब छद्म हैं। ये कहीं देश को छोड़कर जाने वाले नहीं, लेकिन राजनीतिक स्वार्थ से चलाये जा रहे अभियान को दृढ़ कर रहे हैं। इस अभियान के द्वारा सरकार को उसके सही पथ से पथभ्रष्ट किया जा रहा है। कलम बेंचू साहित्यचोरों के साहित्य से यदि उनका स्वयं का हित सिद्ध हो जाता है तो देश सहिष्णु है अन्यथा असहिष्णु। यह कैसा न्याय है? कैसा सत्य है? देश में असहिष्णुता-असहिष्णुता कह कर लोगों को डराने की कोशिश की जा रही है। इस डर के कारण बहुत-सी घटनाएँ सामने आ रहीं हैं। २८ नवम्बर के दैनिक जागरण के तथ्यों से पुष्ट एक घटना में आमिर खान के बयान से पीडित होकर एक पति ने आपस में झगड़ा किया और पत्नी ने आत्महत्या भी कर ली। प्रबुद्ध पाठको देश में असुरक्षा का माहौल है या इसे बनाया जा रहा है, ये तो आप देख ही रहे हैं। बार-बार लोगों को असुरक्षित होने का एहसास कराया जा रहा है, किन्तु सत्य यह है कि देश में शान्ति और सुरक्षा स्थापित है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा था कि 'चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करो।' हे युवाओं! फिल्मों को देखकर इन देशद्रोही अभिनेताओं को चरित्रवान् समझने की भूल न करो। भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि चरित्रनायकों को अपना अभिनेता स्वीकार करो अन्यथा असहिष्णुता के भंवर में फंस कर हम अपने पूर्वजों के रक्त को लज्जित कर बैठेंगे। सावधान रहें, सतर्क रहें। भारत की आन-बान-शान को ठेस न पहुँचे।

-शिवदेव आर्य

गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)



## वार्षिक प्रथम स्तर की नैतिक शिक्षा परीक्षा सम्पन्न



आर्य विद्या परिषद् दिल्ली का निरंतर प्रयास रहा है कि आर्य विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा द्वारा उत्तम संस्कार मिलें और बच्चों में छिपी प्रतिभा निखरे।

इस उद्देश्य के निमित्त प्रतिवर्ष आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा आर्य

विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तकें उपलब्ध करवाना, उत्कृष्ट मार्गदर्शन हेतु, विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन करवाना, विभिन्न अर्चिद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाना और केन्द्रीय स्तर पर सभी विद्यालयों में

एक साथ नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन प्रमुख है।

इस वर्ष नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन दो स्तर पर करवाने का निर्णय लिया गया। प्रथम स्तर की परीक्षा का आयोजन 20 नवम्बर 2015 को आर्य विद्यालयों में हुआ। जिसमें हजारों

बच्चों ने भाग लिया। यह परीक्षा कक्षा एक से कक्षा बारहवीं के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य थी। इस परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी 23 जनवरी 2016 को आयोजित होने वाली दूसरे स्तर की परीक्षा दे सकेंगे।

-संयोजिका

## आर्य समाज अनारकली, दिल्ली वार्षिक उत्सव



आर्य समाज अनारकली, दिल्ली ने अपना वार्षिक उत्सव 26-29 नवम्बर 2015 के मध्य मनाया। कार्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी ने शिक्षकों, विद्यार्थियों और अन्य अनेक श्रोताओं को कर्मफल, पुनर्जन्म, ईश्वर, आत्मा, मानसिक शान्ति कैसे प्राप्त करें, आदि विषयों पर सूक्ष्म जानकारी दी।

उनको शुभ कर्म करने और बुराइयों से बचने की प्रेरणा दी। सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों ने भी अपने जीवन के कल्याण के लिए संकल्प लिए। इस सत्र में डीएवी स्कूलों के अध्यापक, विद्यार्थी, प्रोफेसर, प्रधान श्री पूनम सूरी जी एवं अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

-सत्यपाल आर्य

## गाँधी मैदान, पटना पुस्तक मेले में आर्य समाज की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा-वैदिक प्रकाशन हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा गाँधी मैदान, पटना में साहित्य प्रचार के लिए स्टाल लगाया गया। बिहार आर्य

प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद जी ने उद्घाटन करते हुए आर्य साहित्य प्रचार सराहना की। स्टाल पर साहित्य खरीदने वाले लोगों का तांता लगा रहा।-रवि आर्य

## आर्य समाज मन्दिर मुलतान नगर का 54वां वार्षिकोत्सव



आर्य समाज मन्दिर मुलतान नगर का 54वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम एवं पूर्ण वैदिक ऋति से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से किया गया। इसमें चार यजमान परिवारों को आमंत्रित किया गया। सर्वश्री कुलबीर सिंह सुरजेवाला, रवि शर्मा, सुनील कुमार अग्रवाल एवं दलजीत मनचन्दा का परिवार संपूर्ण भारतीय गणवेश धोती

कुर्ता पहन कर यज्ञवेदी के चारों तरफ बैठे। गुरुकुल नोयडा के पांच ब्रह्मचारियों के साथ यज्ञब्रह्मा पण्डित धर्मप्रकाश शास्त्री मंत्रोच्चारण कर रहे थे। श्रद्धेय साध्वी माता उत्तमा यति जी एवं पण्डित नरेशदत्त आर्य जी ने यजमान परिवारों को अपना स्नेहाशीष दिया। यज्ञशाला में सर्वत्र पवित्रता व उत्साह का वातावरण था।-राजकुमार आर्य



11 नवम्बर 2015 को रामलीला मैदान में आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव के अवसर पर नाटिका प्रस्तुत करते महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादी खामपुर के बच्चे।

## आर्य समाज हनुमान रोड का 93वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली का 93वां वार्षिकोत्सव वैदिक सत्संग एवं सामवेदीय यज्ञ डॉ. धर्मन्द्र कुमार शास्त्री (पूर्व सचिव संस्कृत अकादमी) के ब्रह्मत्व में दिनांक 25 से 29 नवम्बर 2015 के मध्य सम्पन्न हुआ। सामवेद की ऋचाओं के माध्यम से यज्ञ पर विशेष प्रवचन एवं गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। स्कूली बच्चों द्वारा श्री रतन लाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। समापन समारोह के अवसर पर उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री स्वामी



धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने मानव मात्र का धर्म एक ही है तथा डॉ. सुधीर कुमार आर्य जे.एन.यू. ने सुख की तलाश में भटकता इन्सान एवं डॉ. धर्मन्द्र कुमार शास्त्रीजी ने माता-पिता और सन्तान का परस्पर



दायित्व क्या है विषय पर विद्वानों ने महत्वपूर्ण विचार रखे। समारोह के अन्त में मंत्री दयानन्द यादव ने विभिन्न आर्य समाजों से आए सदस्यों एवं अधिकारियों का धन्यवाद किया।

-कर्नल आर के वर्मा



## संस्कृतम् मानवजीवनमस्योद्देश्यम् (जीवनस्योद्देश्यम्)

विदुषां कथनमस्ति यत् 'प्रयोजनमनुद्देश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते'। साधारणो जनोऽपि प्रयोजनं विना कस्मिंश्चिदपि कार्ये न प्रवृत्तो भवति। मनुष्यो जन्म धारयति। तस्य जीवनस्य किञ्चिदुद्देश्यमवश्यमेव भवेत्। संसारे ये उद्देश्यहीना भवन्ति, ते कदापि सफला न भवन्ति।

जीवनस्य किमुद्देश्यं स्यादिति विचारे प्रथमतस्तत् समक्षं समायाति यत् जीवनस्योद्देश्यं समुन्नतं स्यात्, येन जीवनस्य सफलता स्यात्। समुन्नतेषु उद्देश्येषु देशसेवायाः समाजसेवायाः परोपकारस्य जातेरुद्धरणस्य विद्योन्नतेश्च भावना सम्मुखमायाति। मनुष्यः सामाजिकः प्राणी वर्तते, अतो यदि समाजः समुन्नतोऽस्ति तर्हि सर्वेऽपि सुखिनो भविष्यन्ति। यदि

समाजो न समुन्नतोऽस्ति तर्हि सर्वेऽपि विपत्तग्रस्ता दीना हीनाश्च भविष्यन्ति। यदि देशः पराधीनोऽस्ति तर्हि मनुष्येषु स्वाभिमानस्य भावना न भविष्यति। अतो मनुष्यजीवनस्य मुख्यमुद्देश्यं भवति यत् स मानवजीवनस्य साफल्याय परोपकारं कुर्यात्, देशसेवां कुर्यात्, समाज सेवां कुर्यात्, विद्यायाश्चोन्नति कुर्यात्। एवं प्रकारेणैव जीवनं सफलं भवति।

जीवनस्य सफलतायै एतदपि सदा प्रयत्नीयं यत् स कदाचित्तदपि पापं न कुर्यात्, कुत्सितं कर्म न कुर्यात्। पवित्रजीवनस्य यापनेनैव जीवनं सफलं भवति। उक्तं च-

मुहूर्तमपि जीवेत, नरः शुक्लेन कर्मणा।

न कल्पमपि कृष्णेन,

लोकद्वयविरोधिना।।।।।

मनुष्यजीवने सदा सवैरेषु प्रयत्नः करणीयो यत् स महाविद्वान् महापराक्रमी महायशस्वी सच्चरित्रो दानी परोपकारी समाजसेवी लोकहितकारी धर्मात्मा च स्यात्, अन्यथा मनुष्यजीवने पशुजीवने च न कोऽपि भेदोऽस्ति। साधूक्तं च-

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैर्विज्ञानविक्रमयशोभिरभ्यमानम्। तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।।।।

यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे, दीने दयां न कुरुते न च बन्धुवर्गे।

किं तस्य जीवितफलेन मनुष्यलोके, काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते।।।।।

मनुष्यो जीवननिर्वाहाय यां कामपि आजीविकां ग्रहीतुं शक्नोति, पठनं पाठनं कृपि वाणिज्यं सेवाकर्म समाजसेवादिकं वां। परन्तु स सदा जीवनसाफल्याय सत्कर्म अवश्यं कुर्यात्। निरुद्देश्यं जीवनं विनश्यति। अतः कदाचिदपि उद्देश्यत्यागो न विधेयः। मनुष्यस्य सदुद्योगेन सदुद्देश्यमपि अवश्यं पूर्णं भवति।

### रचानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

### पृष्ठ 1 का शेष

मुगलों की तरह अस्मत् रौंदकर भी चले जा सकते थे।

दरअसल ये गलती मल्लिकार्जुन खड्गे की नहीं है। इतिहास में जो पढ़ाया जाता है लोग वो ही बोलते हैं और इतिहास किसने लिखा पहले मुगलों ने फिर वामपंथियों ने जो इस देश में अपनी पकड़ बनाना चाहते थे और हर बार उत्तर भारत में आकर फेल हो जाते थे क्योंकि उत्तर भारत में इनका विदेशी इतिहास नहीं चल पाता था तो इन लोगों ने अपना गुस्सा इतिहास पर निकाल दिया और खुद को राम और कृष्ण की संतान मानने वालों को विदेशी लिखने लगे किन्तु दुर्भाग्य इस बात का कि सत्ता में रहते हुए देश की आजादी के गीत गाने वाले लोग आज तक उस इतिहास को नहीं बदलवा सके। अभी कुछ दिन पहले मैं इतिहास

### कब तक दूषित ...

को सामान्य ज्ञान की किताबों में खंगाल रहा था कि अचानक जो निकला वो वाकई मल्लिकार्जुन जैसे लोगों की बातों को सत्य करता दिखाई देता है जैसे लिखा है- भारत में आर्यों ने आकर किस सभ्यता की नींव डाली थी? वैदिक सभ्यता की। भारत में आने वाले आर्य क्या कहलाते हैं? इंडो आर्य। आर्यों का मुख्य निवास स्थान कहां माना जाता है। आल्पस पर्वत के पूर्वी क्षेत्र और यूरेशिया। आर्य भारत में सबसे पहले कहां बसे थे? सप्त सिन्धु प्रदेश में। आर्य कब भारत आये 1500 ई. पूर्व के आस-पास भारत में। आर्य कहां से आये थे? मध्य एशिया से। आर्यों के प्राचीन आदरणीय ग्रंथ कौन सा है? वेद आर्यों का सबसे प्रथम प्राचीन ग्रन्थ है। वेद कितने हैं? चार-ऋग्वेद, यजुर्वेद,

सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद के सूक्तों की रचना किस प्रदेश में हुई थी? पंजाब प्रदेश। ऋग्वेद में सम्पत्ति का प्रमुख रूप क्या था? गो धन। आरम्भिक आर्यों का मुख्य पेशा क्या था? पशुपालन, आर्यों के समय की मुख्य पैदावार क्या थी? धान, गेहूँ, जौ। आर्यों की भाषा क्या थी? संस्कृत। आर्य दार्शनिक क्या कहलाते थे? ऋषि। समाज में कैसी विवाह प्रथा प्रचलित थी? जातीय, अंतर्जातीय तथा विधवा विवाह, आर्य शब्द का मूलतरु क्या अर्थ है, उत्तम।

अब जो इन पुस्तकों को पढ़ेगा वो तो यहीं कहेगा की आर्य बाहरी थे, किन्तु मल्लिकार्जुन खड्गे जी एक बार यह भी बता देते कि बाबर कहां से आया था? अकबर, मोहम्मद बिन कासिम, नादिरशाह चेंगेज खान, अल्लाउद्दीन

खिलजी, शेरशाह शूरी कुतुबुद्दीन, गौरी, गजनवी, बलबन, तुगलक, टीपू औरंगजेब आदि हिंदुस्तान की लाज लुटने वाले ये लोग कहां से आये थे? क्या ये यहीं पैदा हुए थे? लाज बचाने वालों को, अपने रक्त से इस भूमि को सींचने वालों को तो यह कहकर अपमानित कर दिया कि विदेशी है, एक बार यह भी बता दो कि मुगल कहां से आये थे? खैर इन प्रश्नों से तो देश में असहिष्णुता फैल जाती है। इससे पहले हमारे इन प्रश्नों से असहिष्णुता फैले सुमित्रा महाजन जी का आभार कि उन्होंने मल्लिकार्जुन खड्गे के इस बयान को संसद की कार्यवाही से बाहर कर दिया लेकिन मल्लिकार्जुन के इस बयान ने हमको जरूर झकझोर दिया है कि कब तक हमें यह दूषित इतिहास पढ़ाया जाता रहेगा? -राजीव चौधरी

यजुर्वेद अध्याय 7 के 24 वें मन्त्र में कहा गया है- इस संसार का आदिमूल, अक्षय ज्ञानेश्वर्य का भण्डार सच्चे मित्र के समान हित साधक वह परमात्मा ही है। उसी ने हमारे संसार में आते ही अपनी सर्वोत्कृष्ट संस्कृति लोक और परलोक साधने के लिए हमें दी। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने और समाज के कल्याण के लिए उस उत्तम धर्ममार्ग को अपना कर संसार को सन्ताप से बचावें।

समाज और देश की उन्नत और अवनत दशा को मापने का एक ही मापदण्ड है और वह है संस्कृति। वैदिक संस्कृति में जीवन-यापन का जो उच्च आदर्श रखा है, वह संसार को स्वर्गधाम बनाने वाला है। वेद ने मनुष्य की तो बात ही क्या है, प्राणिमात्र को आत्म तत्व की दृष्टि से अपना बताया

## वैदिक संस्कृति

है। संस्कृति के उदाहरण देखिए-

1. बाल्मीकि रामायण में प्रसंग है कि अपने पिता राजा दशरथ की प्रतिज्ञा का पालन करने के लिए उनका बड़ा पुत्र श्री राम घर परिवार छोड़ कर वन में अपनी पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण को साथ लेकर चला गया था। दूसरे छोटे भाई भरत को राज मिलना था किन्तु वह भी राज को छोड़कर बड़े भाई राम को वापस लाकर राज सौंपने के लिए वन में चला गया था। इधर राम उधर भरत दोनों भाईयों ने एक दूसरे की भलाई के लिए राज को ठोकर मार दी थी। यह है वेदों की शिक्षा का उच्च आदर्श। वेद प्रथमा संस्कृति है।

2. ऋष्यमूक पर्वत पर श्री राम ने

सीता जी के गहने पहचानने के लिए लक्ष्मण से कहा था। लक्ष्मण ने कहा मैं तो केवल पैरों के आभूषण पहचानता हूँ क्योंकि मैं प्रातः उनके पैरों की और देखकर उन्हें प्रणाम करता था। यह है पन नारी को माता के समान समझने का ऊँचा आदर्श। यह है वैदिक संस्कृति की पहचान। संसार में ऐसी संस्कृति दूसरी नहीं है।

3. छान्दोग्य उपनिषद अध्याय 11 में लिखा है कि प्राचीनकाल में केकय देश के राज आश्वपति ने एक प्रसंग में कहा था कि मेरे देश में कोई चोर नहीं है, न कोई कृपण और न शराबी है, यज्ञ न करने वाला कोई नहीं है, न कोई अविद्वान है, चरित्रहीन

भी नहीं है और जब दुश्चरित्र पुरुष ही नहीं तो पुराचारिणी स्त्री होने का कोई प्रश्न ही नहीं।

4. रघु राजा के विषय में कालीदास लिखते हैं कि प्रजा के रक्षक रघु के राज्य में जेलखानों में कोई बन्दी नहीं था, जिसे बन्धन मुक्त करके वह पुत्रोत्सव में वृद्धि कर लेता।" इस कारण उसने कुछ हाथियों और घोड़ों को खुलवा कर उन्हें स्वतन्त्र करके पुत्रोत्सव को मनाया। इस संस्कृति पर चलने वाले ही ऐसा करते हैं।

मनुष्य को कुपथ से सुपथ पर विचार ही ला सकते हैं और वे जीवन दायी विचार वैदिक संस्कृति में ही हैं। इस संस्कृति में भौतिक उन्नति से कोई विरोध नहीं है। भारत के अतीतकाल में यहाँ भी

## RATIONAL BASIS OF VEDIC LORE, ARYA SAMAJ AND DR.B.R. AMBEDKAR - HOW FAR AND HOW CLOSE?

The general view that Dr. B.R. Ambedkar became a Buddhist only for reasons of its having a rational outlook needs to be given a second thought. If rationality was the only consideration, in that case other options like joining the fold of Arya Samaj or Sikhism were also open to Dr. Ambedkar. Arya Samaj a Vedic movement having a rational outlook was actively engaged in the Dalit upliftment programme much before Dr. Ambedkar appeared on the scene. Also to an extent, this Arya Samaj movement certainly contributed in shaping Dr. Ambedkar's career since his student days.

Of course, Dr. Ambedkar was a prominent personality, a legal luminary and a literary figure. However, as far as Vedic studies are concerned, it seems that like many other contemporary writers he too based his comments primarily on common anarsha granthas, literature with several interpolations written mainly by medieval masters during India's period of decadence. His impressions are apparently not based upon study of texts free of interpolations representing the true Vedic tradition in a holistic manner. Had he also studied the rational arsha vedic exegesis and uninterpolated writings of the ancient sages perhaps his views like that of Swami Dayanand Saraswati would have been different and he would have found satisfactory explanations to certain riddles/enigmatic points/secrets of the symbolic Vedic language in our ancient texts.

Rationality is the basis of Vedic lore. As per Nirukta of Acharya Yaska, Logic has been described as one of the rishis - Tarkoo vai rishi. Manu Smriti (12-106) says Yasterkenanusandhatey sa dharmam ved netra, i.e., one who investigates the truth with logic and reason he alone can comprehend the truth. There are hundreds of Vedic hymns where prayers have been made to God for medha budhi which is capable of rational thinking. Even in the Gayatri mantra a devotee prays for intellect which the Vedic people regard as basic for developing a rational outlook. In the Vaishishka Darshan (6.1.1), it is said that Vedic knowledge should be understood with reasoning and objectivity or else it will look absurd - Budhipurva vakyakritivrdy.

It is also a historical fact that the proper study of Vedas had fallen into disuse and misuse much before the advent of Jainism and Buddhism and clues to properly understand Vedic Samhitas almost remained sealed for centuries leading to animal sacrifices in Yajnas and other obnoxious practices. The ancient methodology as propounded in Brahman Granthas, Nirukta of Yaskacharya and some other texts to rationally interpret the Vedas had been forgotten. It was Maharishi Dayanand Saraswati (1824-1883) who in recent times revived that methodology and made a serious

attempt to put Vedic studies in their right perspective. That is why Sri Aurobindo says "In the matter of Vedic interpretation, I am convinced that whatever may be the final interpretation, Dayananda will be honoured as the first discoverer of the right clues. Amidst the chaos and obscurity of old ignorance and age-long misunderstanding his was the eye of direct vision that pierced to the truth and fastened on that which was essential. He has found the keys of the doors that time had closed and rent asunder the seals of the imprisoned fountains." (Source: Bankim-Tilak-Dayananda by Sri Aurobindo, pub. by Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry, 1st Ed. 1940).

It is quite unlikely that a well read person like Dr. Ambedkar was not aware of the works of Swami Dayanand Saraswati and his rational views which had influenced even his sponsors i.e., Maharaja of Baroda and Maharaja of Kolhapur who supported his education. Dr. Kushal Dev Shastri in his book "Arya Samaj aur Dr. Ambedkar" writes that apart from Maharaja Sayaji Rao of Baroda Estate and Maharaja of Kolhapur- Rajrishi Sahuji who too had leanings towards Arya Samaj contributed financially for the education of Dr. B.R. Ambedkar and he was sent on a scholarship abroad for higher studies. Incidentally this happened when the educational and social services for upliftment of downtrodden classes in Baroda were being looked after by stalwarts like Pt. (Master) Atma Ram Amritsari an Activist of Arya Samaj who moved from Punjab to Baroda in 1908 to help Maharaja in his great mission. In removal of untouchability and upliftment of depressed classes, Pandit Atma Ram Amritsari, Inspector of Schools at Baroda initially faced lot of challenges and difficulties like many other Arya Samajists who despite all odds were engaged in similar missions in other parts of the country. Taking cue from the life and teachings of Swami Dayanand, Arya Samaj was quite active in raising the social and educational level of Dalits since 1885 especially in North India. So much so Mahashya Ram Chand Mahajan who was actively associated with removal of untouchability programme of Arya Samaj in Jammu region was severely beaten by Rajputs and he succumbed to his injuries resulting into his death on 20th June, 1923. In Sialkot Maghodar Sabha was formed in 1903 and Pandit Ganga Ram successfully carried on his reform programme and got a large number of meghas (considered to be low caste) admitted in Arya Gurukuls and other educational institutions. From 1903 onwards many dalitodhar/Achhutodhr sabhas were established at Sialkot, Lahore, Amritsar, Allahabad, Delhi, etc. which took up constructive programmes for the welfare of Dalits. In fact this word 'Dalit' was also coined for the first time by Arya Samaj as is apparent from names of various

Sabhas like All India Shradhanand Dalitodhar Sabha which was established in 1921 and Dayanand Dalitodhar Sabha established in Lahore on 11 May, 1930. After his return from U.S.A., Dr. Ambedkar wrote to Pt. Atma Ram that due to his poor legal practice he was not in a position to immediately clear the educational loan taken from Maharaja Baroda. Panditji who had close contact with Dr. Ambedkar took up the matter with Maharaja and got the loan waived off completely. Many Dalit students of Pt. Atma Ram Amritsari in those days became Mechanical Engineers. Panditji's family members including his daughter Sushila Kumari remained closely associated with the work relating to dalit welfare.

There is no chance that all such massive dalit welfare programmes/removal of untouchability and other attempts made by Arya Samaj in breaking the birth based caste barriers could have escaped the attention of Dr. Ambedkar. It was especially, with the efforts of Shri Ghansham Singh Gupta, President, Madhya Pradesh Arya Pratinidhi Sabha, in 1937 an Act was passed for validation of Inter-caste marriages amongst Hindus. An important question, therefore, arises here as to why Dr. Ambedkar did not join the rational Arya Samaj which repudiated 'caste' based on birth and his choice fell for Buddhism which in those days was hardly doing any ground work? Dr. Ambedkar has admitted in his book 'Annihilation of Caste' "I must admit that the Vedic theory of Varna as interpreted by Swami Dayanand and some others is a sensible and an inoffensive thing. It did not admit birth as a determining factor in fixing the place of an individual in society. It only recognized worth. The Mahatma's (Mahatma Gandhi) view of Varna not only makes nonsense of the Vedic Varna but it makes it an abominable thing. Varna and Caste are two very different concepts".

To my mind Dr. Ambedkar ignored Arya Samaj and embraced Buddhism because of his misconceptions and misgivings about the Vedic texts. He outrightly rejected the authority of Vedas and Shastras primarily because of the influence of the distorted writings of orthodoxy as well as the imperial scholars. Dr. Ambedkar writes "You must take the stand which Guru Nanak took. You must not only discard the Shastras, you must deny their authority, as did Buddha and Nanak. You must have the courage to tell the Hindus, that what is wrong with them is their religion-the religion which has produced in them this notion of the sacredness of caste." (Source: Annihilation of Caste, by Dr. B.R. Ambedkar, pub. by Anand Sahitya Sadan, Aligarh). Here I think Dr. Ambedkar was mistaken and he missed some of the important points. No doubt Guru Nanak was opposed to the evil practices prevalent in those days amongst Hindus, but his role was that of a good Doctor who does not

pluck the eye in order to treat some eye ailment. The root of Adi Granth (Guru Granth Sahib) is in the Vedas and Guru Nanak says "Asankh Granth Mukh Ved Path" i.e., there are innumerable scriptures but the main amongst them are the Vedas. At another place he says Guru Nanak clearly says as the lamp is lit darkness is removed. Similarly by study of the Vedas, evil thoughts-paaps are destroyed - Diva baley andhera jai, Ved path mati papa khai (Adi Granth - page 791).

Similarly we find that Pt. Dharma Deva Vidya Martanda, an eminent scholar from Arya Samaj in his book "Mahatma Budha an Arya Reformer (1957 Ed.) while quoting some references from a Buddhist text, 'Sutta Nipata' has proved Mahatma Buddha's belief in the authority of the Vedas and says "It is generally believed that Buddha was opposed to the Vedas altogether and he revolted against their authority. But on an impartial study of the Buddhist scriptures, containing Buddha's discourses we find that there is no truth in this common belief. Certainly as we have shown above, he had no regard for those people who were well versed in the Vedas, but were not leading pure and noble lives according to the Vedic teachings." In a meeting with Pt. Dharam Devji, Dr. Ambedkar said that you have explained to me about the ancient Vedic religion like parents teaching a child, but to me it appears that mindset of the orthodoxy does not seem to be changing.

However, I think there was a fundamental difference between the approach of Dr. Ambedkar and Arya Samaj. Dr. Ambedkar wanted to completely annihilate the caste system while the majority of leaders of Arya Samaj were keen to revive the ancient Vedic System of Varna based on qualities and actions of an individual, i.e., the karmana system. 'Jat-Pat-Todak Mandal' of Lahore whose members were overwhelmingly Arya Samajists who played a very active role in removal of untouchability and breaking the caste barriers invited Dr. Ambedkar to preside over their conference in 1936. However, the Conference had to be cancelled because Dr. Ambedkar was not willing to expunge his derogatory remarks about the Vedic texts from his address. Mr. Sant Ram, Secretary of the above Mandal in a letter sent to the Harijan mentioned that in the supplementary portion of his written speech, Dr. Ambedkar also insisted that this was his last address as a Hindu. According to Dr. Mahendradas Thakur, Dr. Ambedkar had at one point made up his mind to join Arya Samaj along with persons of Dalit community, but due to proximity of Arya Samaj and Hindu Mahasabha, he instead decided to embrace Buddhism (Source: Arya Samaj aur Dr. Ambedkar by Dr. Kushal Dev Shastri, 2008 Ed. pub. by Shri Ghudmal Prahladkumar Arya Dharmarth Nyas, Hindon City, Raj). (Y.K. Wadhwa)

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी श्रृंखला

में आगामी 3 माह में जनवरी 2016 से मार्च 2016 के मध्य 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियों निश्चित कर दी गई हैं।

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के

बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। फार्म [www.thearyasamaj.org](http://www.thearyasamaj.org) से डाउन लोड किए जा सकते हैं। फार्म की फोटो प्रति भी मान्य है।

13वां परिचय सम्मेलन (गुजरात)

दिनांक 3 जनवरी, 2016

वाचनस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुज.)

अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2015

संयोजक: सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)

दिनांक 14 फरवरी, 2016

आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, स्तलाम (म.प्र.)

अन्तिम तिथि 30 जनवरी, 2016

डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)

दिनांक 27 मार्च, 2016

आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू

अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016

संयोजक : राकेश चौहान- 09419206881

### पृष्ठ 1 का शेष

### सत्ता का नहीं, जनाजे ...

वो खबर जिसमें किसी मुस्लिम की भूमिका होती है उसे तो दफनाया दिया जाता है और जिस खबर में बहुसंख्यक वर्ग से किसी अपराधी की भूमिका होती है उस खबर के जनाजे को मीडिया के द्वारा कंधा दिया जाता है। हम नहीं जानते यह सब क्यों होता है पर अपराध को धर्म से जोड़कर जो घिनौनी खबर बनाई जाती है वो जरूर इस धार्मिक खाई में फावड़े का काम करती है। कोई व्यक्ति मारा जाए तो उसे उसकी जाति को जोड़ना खतरनाक परिस्थिति है। इससे बचना होगा। दादरी की घटना को मीडिया ने जो कंधा दिया तो आजतक वो मातम रुक नहीं पा रहा है जबकि सब जानते हैं कि इकलाख न कोई सामाजिक रूप से ना ही राजनैतिक रूप से, ना ही धार्मिक रूप से कोई इतनी बड़ी हस्ती थी की जिस पर दो महीने बहस की जाये वो बस एक हत्या थी और अपराधी पकड़े गये थे पर मीडिया की बदोलत प्रधानमंत्री से इस प्रसंग पर विदेशी धरती पर भी सवाल पूछे गये यह जरूर हमारे लिए शर्मनाक है।

अपराधी अपराधी है। चाहे वो किसी भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय या दुर्लभ, विलुप्त प्रजाति का ही क्यों न हो उसके

लिए देश में लोकतंत्र है, कानून है, सरकार है, अदालत है, लेकिन हर अपराध के बाद न्यूज स्टूडियो में जिस तरह धार्मिक अदालतें लगती हैं, एक मौलाना, एक आरएसएस से, एक बीजेपी से, एक वामपंथी, कांग्रेसी बैठकर दलीले ली-दी जाती हैं वो जरूर समाज के आपसी सौहार्द को कमजोर करती है। यह लोग इससे क्या साबित करना चाहते हैं? कि देश में कानून व्यवस्था चौपट हो गयी? अब बस न्यूज एंकर ही शायद फैसले देंगे! पत्रकारिता समाज को जोड़ने का सबसे सभ्य माध्यम माना जाता था जो धर्म और जाति से ऊपर उठकर सोचता था, लिखता था-बोलता था, लेकिन आज इन लोगों की वजह से पत्रकारिता को वैश्या, भांड, बिकाऊ और ना जाने किन-किन शब्दों और अमर्यादित अपशब्दों से पुकारा जाने लगा है? शायद आने वाले दिनों में पत्रकारिका की ये गरिमा और गिरे!

**दोहरा मापदंड-** प्रिंट मीडिया अपनी जगह ठीक है प्रिंट मीडिया सम्पादकीय से अपनी खबरों से तर्क के साथ शब्द छापता है, किन्तु एलेक्ट्रॉनिक मीडिया खबर के हिसाब से म्यूजिक, ध्वनि पैदा कर माहौल

खड़ा करता है खबर का सीरियल बना दिया जाता है सत्य को छिपा कर। मुझे याद है मुजफ्फरनगर के दंगे से पहले एक समुदाय प्रकाशन से कार्यवाही की मांग कर रहा था लेकिन प्रसाशन में बैठा एक बड़ा नेता जो अल्पसंख्यक वर्ग से था वो धार्मिक आधार पर किस तरीके से अपराधियों को बचा रहा था, नतीजा सैकड़ों घर तबाह और मासूमों की जान गयी फिर मातम की ध्वनि के साथ मीडिया कंधा देने पहुंच गयी थी। दरअसल हमेशा बड़े नेता, धार्मिक गुरु, चाहे वे किसी भी धर्म से हों वे अपने बयान देकर निकल जाते हैं किन्तु भुगतना हमेशा किसी इखलाक को या किसी प्रशांत पुजारी को पड़ता है फिर नई बहस जन्म ले लेती है; फिर वो लोग धार्मिक सूत्र में बंधकर अपने धर्म के खतरे की दुहाई देने लगते हैं जिस कारण भय जन्म लेता है और वो भय संगठन को जन्म दे देता है और संगठन फिर देश में भय पैदा करता है।

30 नवम्बर को महाराष्ट्र के मालेगांव, धुले और नदुरबार समेत कई इलाकों में रविवार को सैकड़ों मुस्लिमों ने आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट के खिलाफ लेख और कार्टून छापने वाले अखबार के

दफ्तर पर हमला कर दिया। मुस्लिमों ने 'लोकमत' अखबार की प्रतियां जलाई और कई जगहों पर विरोध प्रदर्शन भी किया। आरोप है कि अखबार ने अपने संडे एडिशन में 'मंथन' सप्लीरमेंट में आई एस आई एस विरोधी लेख लिखा था जिसके कारण यह हमला हुआ था लेकिन मीडिया ने यह खबर दफना दी। कल यदि उनके खिलाफ कार्यवाही होती है तो फिर यही मीडिया आवाज उठाएगी कि देश में अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव हो रहा है। जबकि सब जानते हैं कि तिरंगे से लेकर कानून और लोकतंत्र में जिसकी आस्था है उसके साथ इस देक में कोई भेदभाव नहीं है किन्तु जो लोग राष्ट्रीय सम्मान के चिन्हों का अपमान करते हैं वो फिर किस आधार पर सम्मान की अपेक्षा करते हैं? ऐसे मामलों में भी मीडिया को आवाज उठानी चाहिए वरना मीडिया की धर्मनिरपेक्ष आवाज देश में हिन्दू और मुस्लिम सिख और इसाई आतंकी पैदा करती चली जायेगी और स्मरण रखने योग्य बात है आतंकी का कोई मजहब नहीं होता आज हमला लोकमत पर था कल न्यूज स्टूडियो के साथ देश में भी हो सकता है!

-राजीव चौधरी

### पृष्ठ 5 का शेष

### वैदिक ...

भौतिक उत्कर्ष कम नहीं था।

उत्कर्ष की चरम सीमा पर समझे जाने वाले अमेरीका में आज भी करोड़ों निरक्षर हैं। तिथि 4-6-1883 के रवीवासरिय 'नवभारत' में लिखा था कि अमेरीका का हर पाँचवाँ प्रौढ़ अनपढ़ है।

5. जब आर्यों का पुराना इतिहास देखते हैं तो मन में सुख की अनुभूति होती है। अब से लाखों वर्ष पहले रामायण के इतिहास में लिखा है कि अयोध्या नगर और समस्त देश के निवासियों का जो उच्चकोटि का व्यवहार वर्णित है वह अनुपम है-

“सारी अयोध्या में कामी, कायर, क्रूर, अविद्वान् और नास्तिक नहीं था।” प्रति दिन यज्ञ न करने वाला, अनुदार स्वार्थी और चोर कोई नहीं था।” “समस्थ प्रजा

सुखी थी और सारे राज्य में राजद्रोही कोई नहीं था।’

6. महाभारत में लिखा है कि पाण्डव जब वनवास में थे तब एक जलाशय के स्वामी ने युधिष्ठिर से कहा था कि मैं तुम्हारे उत्तरों से प्रसन्न हूँ तुम अपने एक भाई को जीवित करा लो, तब युधिष्ठिर बोला नकुल को जिन्दा कर दो। तब वह जलाशय का स्वामी बोला यह तो तुमने कोई बुद्धिमानी का काम नहीं किया। आप ने धनुर्धारी अर्जुन को या गदाधारी भीम को जो योद्धा हैं उनमें से किसी को जीवित कराते। युधिष्ठिर ने कहा हमारी दो माताएँ हैं उनका एक-एक पुत्र भी जीवित रहेगा तो दोनों को कुछ तो सन्तोष प्राप्त होगा। इसलिए मैंने ऐसा किया है।

जब जलाशय के स्वामी ने कहा मैं

तुम्हारे इस व्यवहार से खुश होकर तुम्हारे सभी भाईयों को जिन्दा करता हूँ।

यह है वैदिक संस्कृतिक की शिक्षा कि दूसरों की भलाई के लिए भी काम करना चाहिए। अपनी उन्नति के साथ-साथ दूसरों की भी उन्नति करनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन की ज्योति को बुझाने वाले अपने रसोइये जगन्नाथ को मार्ग-व्यय के लिए, रुप दे दिये और बाल-बाल बचाकर वहाँ से निकाल दिया कि उनके प्रेमी जन भी कुछ भी कल्पना तक नहीं कर सकें। उनके पास रहने वाले कर्मचारियों को इस बारे में कुछ भी सन्देह नहीं हुआ। स्वामी जी ने विष प्रयोग का कभी नाम तक नहीं लिया। जगन्नाथ को स्वामी दयानन्द ने नेपाल भेज दिया और उसने भेष बदलकर नेपाल में पन्द्रह वर्ष व्यतीत किये।

वेदों का प्रचार करने वाला देव दयानन्द धरती का विष पी गया और वेदामृत से इसी धारा को सिंच गया। वैदिक संस्कृति पर चलने वाले ही संसार का भला कर सकते हैं।

वर्तमान में सारे संसार का वायुमंडल अशान्त है। वैज्ञानिकों का मस्तिष्क संहारक अस्त्रों के आविष्कार में लगा हुआ है।

केवल आर्य समाज को ही इस बात की चिंता है कि दुःखी संसार को वेदामृत पिला कर किसे प्रकार सुखी किया जाए।

अतः मन्त्र में कहा गया है कि इस प्रथमा संस्कृति के आधार पर ही विश्व में सुख और शान्ति स्थापित हो सकती है। इसलिए हम सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि इस संस्कृति का तन-मन व धन से प्रचार करें।

-सत्यवीर आर्य



30 नवम्बर से 6 दिसम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3 दिसम्बर/ 4 दिसम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 दिसम्बर, 2015

## 89वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस



# शोभायात्रा

शुक्रवार 25 दिसम्बर, 2015

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

**भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे**

## विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2

सम्मान समारोह : श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार एवं पं० ब्रह्मानन्द शर्मा आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

कृपया अपने वाहनों को पीली कोठी की ओर से लाने में आपको सुविधि होगी।

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

### कैलेण्डर वर्ष 2016

बढ़िया 130 ग्र. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने

पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा

अतिरिक्त शुल्क (200/- सैंकड़ा) पर

उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339



### आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोएडा का वार्षिकोत्सव

दिनांक : 9 से 13 दिसम्बर 2015, स्थान : आर्य समाज भवन, बी-69, सैक्टर-33, नोएडा, कार्यक्रम : वेद कथा 9-12 दिसम्बर प्रातः 8.30 से 9.15 तक, सायं 8-9 बजे तक, 12 दिसम्बर 2015 : महर्षि दयानंद उपकार एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मलेन : प्रातः 10 बजे, आर्य महिला सम्मेलन : अपराह्न 3 बजे, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन : सायं 6.30 बजे, विश्व शांति-सौहार्द महायज्ञ : 101 कुण्डिय : 13 दिसम्बर प्रातः 8 बजे, मुख्य समारोह : गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन : 13 दिसम्बर प्रातः 10 बजे से।  
निवेदक : आर्य कैप्टन अशोक गुलाटी, उपप्रधान, मो. 09871798221

### आर्य समाज राजनगर पालम कालोनी का साप्ताहिक सत्संग

आर्य समाज राजनगर पालम कालोनी, नई दिल्ली-45 में दिनांक 13 दिसम्बर 2015 को साप्ताहिक सत्संग में आचार्य पवनवीर शास्त्री, गुरुकुल शुक्रताल के उपदेश व भजनों का कार्यक्रम होगा। आर्य बन्धुओं से अनुरोध है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचने की कृपा करें। रतन आर्य मंत्री

दैनिक यात्रिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

**MDH हवन सामग्री**

मात्र 90/- किलो (10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 5 किलो, 1 किलो एवं आधा

किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1,

दूरभाष - 23360150, 9540040339

**एम डी एच**

असली मसाले  
सब-सब



MAHASHIAN DI HATTI LTD.

Regd. Office : MDH House, 9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015, Ph. : 25939609, 25937987

Fax : 011-25927710 E-mail : mdhld@vsnl.net Website : www.mdhspices.com



ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्योगिक क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह